

Argala Stotram in Sanskrit (सम्पूर्ण अर्गला स्तोत्र)

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीमहालक्ष्मीदेवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाचः

श्लोक 1:

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥

श्लोक 2:

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥

श्लोक 3:

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 4:

महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 5:

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 6:

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 7:

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 8:

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 9:

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 10:

स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 11:

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 12:

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 13:

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 14:

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 15:

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 16:

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 17:

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 18:

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 19:

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 20:

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 21:

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 22:

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 23:

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

श्लोक 24:

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥

श्लोक 25 (फलश्रुति):

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेत्रः ।
स तु सप्तशतीसङ्ख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥

Argala Stotram In English – Transliteration (उच्चारण मार्गदर्शिका)

Viniyoga (विनियोग)

**Om Asya Shri Argala Stotram Mantrasya Vishnur Rishih,
Anushtup Chandah, Shri Mahalakshmir Devata,
Shri Jagadamba Pritaye Saptashati Pathangatvena Jape Viniyogah.**

Om Namash Chandikayai.

Markandey Uvacha

Verse 1:

**Om Jayanti Mangala Kali Bhadrakali Kapalini,
Durga Kshama Shiva Dhatri Swaha Swadha Namostu Te.**

Verse 2:

**Jaya Tvam Devi Chamunde Jaya Bhutarti Harini,
Jaya Sarvagate Devi Kalaratri Namostu Te.**

Verse 3:

**Madhu Kaitabha Vidravi Vidhatu Varade Namah,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 4:

**Mahishasura Nirnashi Bhaktanam Sukhade Namah,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 5:

**Raktabija Vadhe Devi Chanda Munda Vinashini,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 6:

**Shumbhasyaiva Nishumbhasya Dhumrakshsasya Cha Mardini,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 7:

**Vanditanghri Yuge Devi Sarva Saubhagya Dayini,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 8:

**Achintya Rupa Charite Sarva Shatru Vinashini,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 9:

**Natebhyah Sarvada Bhaktya Chandike Durita Pahe,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 10:

**Stuvad Bhyo Bhakti Purvam Tvam Chandike Vyadhi Nashini,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 11:

**Chandike Satatam Ye Tvam Archayanti Ha Bhaktitah,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 12:

**Dehi Saubhagyam Arogyam Dehi Me Paramam Sukham,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 13:

**Vidhehi Dvishatan Nasham Vidhehi Balam Uchchakaih,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 14:

**Vidhehi Devi Kalyanam Vidhehi Paramam Shriyam,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 15:

**Surasura Shiro Ratna Nigrishta Charane Ambike,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 16:

**Vidyavantam Yashasvantam Lakshmivantam Janam Kuru,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 17:

**Prachanda Daitya Darpagne Chandike Pranataya Me,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 18:

**Chaturbhujе Chaturvaktra Samstute Parameshvari,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 19:

**Krishnena Samstute Devi Shashvad Bhaktya Sadambike,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 20:

**Himachala Suta Natha Samstute Parameshvari,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 21:

**Indrani Pati Sadbhava Pujite Parameshvari,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 22:

**Devi Prachanda Dordanda Daitya Darpa Vinashini,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 23:

**Devi Bhakta Jana Uddama Dattanandodaye Ambike,
Rupam Dehi Jayam Dehi Yasho Dehi Dvisho Jahi.**

Verse 24:

**Patnim Manoramam Dehi Mano Vritta Nusaranim,
Tarinim Durga Samsara Sagarasya Kulodbhavam.**

Verse 25 (Phala Shruti):

**Idam Stotram Pathitva Tu Maha Stotram Pathennara,
Sa Tu Saptashati Sankhya Varam Apnoti Sampadam.**